

कको

॥७१

नीसाथ॥भीनाभीनरहेनहीभात॥एकमेक  
तरमीटजाई॥चीतवरतीचरणेलेथाई॥६५॥स्व  
रूपानंदभयोतबआप॥करेनांकेहेतोदीनवी  
लाप॥जमतरुवरजुधानहीपात॥हेहाहस्तांस  
सकसहरीनीसाथ॥६६॥असर॥३३॥संवत्  
अराढईकोतरोधना॥गांससारसामांहरीजंत  
आसोमाससुकल्पसमी॥स्वांत्यबुंघवरषा  
पुंनमी॥६७॥असरबत्रीशकहीयाजेह॥कस  
स्वामीसदगुरुउपदेह॥असरअसरेतत्वज्ञा  
न॥चीनेतेनरबुंघसमांत्य॥६८॥साहेबकुवे  
रनीजकरुणाकरी॥ककामांगुरुगुंमवीस्त  
री॥६९॥इतीश्रीअंकसीरोमणीगुंयसंपुर्ण  
॥समप्तः॥अथगुरुशीष्यसंमवादिषटचक्र  
भेदगुंयलीप्यतेः॥१॥ऊंगुरुजीकुंनतत्वसेना  
दभयाहे॥कुंनतत्वसेकाया॥कुंनतत्वसेबुंघ  
भईहे॥कुंनतत्वसेमाया॥२॥सुंनवेपुताव्योमत  
त्वसेनादभयाहे॥माहानीधीसेमाया॥तेजत  
त्वसेबुंघभईहे॥तोयतत्वसेकाया॥३॥ऊंगुरु  
जीषटचकरकायाकीभीतर॥कुंनकुंनअशा  
न॥सोईसकलवीधीमोईवतावे॥तत्ववीचारी  
ज्ञाना॥३॥सुंनवेपुताषटचकरकायाकीभीत

रा आप आपने अरुणांता ॥ एक एक त्ये कही सम  
 जाव ॥ सुन बेसी ससहंता ॥ १४ ॥ उंगुरुजी मुल  
 चक्रको हो काहा कु कहीये ॥ कुंन देव का वासा  
 केते जा पञ्जं पा उवे ॥ केते दल पर कासा ॥ १५ ॥  
 सुन बेपुता मुल चक्र हे गु दामंडली ॥ गवरी सुत  
 का वासा ॥ षटसे जा पञ्जं पा उवे ॥ चारु दल पर  
 कासा ॥ १६ ॥ उंगुरुजी मुल चक्र की भली सुनाई ॥ से  
 से दीये न साई ॥ आंत्य चक्रको भेद बतावो ॥ सां  
 मथ हे गुरु राई ॥ १७ ॥ सुन बेपुता आंत्य चक्र हे उ  
 तपत दारे ॥ बंहा सकी हे जांही ॥ षटही से हे स्त्र  
 अजं पा जपही ॥ षटदल कमल की मांही ॥ १८ ॥ उं  
 गुरुजी उभे चक्र अनुसार अनुपी ॥ मोपे दीयो  
 पगाई ॥ नाभी कमल दल पंकज अजं पा ॥ कुंन  
 देवता मांही ॥ १९ ॥ सुन बेपुता नाभ अरुणांते दश  
 दल पंकज ॥ वी सुकरत वी लासा ॥ षटही से हे स्त्र  
 अजं पा जपही ॥ आत्म अं स उलासा ॥ २० ॥ उं गुरु  
 जी तीन चक्र की कथा सुनाई ॥ अंतर दीयो नी  
 साई ॥ रुदे कमल दल पंकज अजं पा ॥ कुंन देवता  
 मांही ॥ २१ ॥ सुन बेपुता रुदे कमल दल दश  
 कहीये ॥ देवनी रंज न जांही ॥ षटही से हे स्त्र अजं  
 पा जपही ॥ अर्ध उरध मध्य मांही ॥ २२ ॥ उं गुरु

**॥ गोष्ठी ॥** जीचारचक्रकी सारसहान्तक ॥ प्राकृतबुधसे  
 पाई ॥ कंठकमलदलपंकजभ्रजंपाकुंतदेवतामां  
**॥ १२ ॥** ही ॥ १३ ॥ सुनवेपुताकंठकमलदलषोडसपंक  
 जसीवदेवतामांही ॥ सेहेस्त्रएकभ्रजंपाजपही  
 सासासबुधडाई ॥ १४ ॥ उंगुरुजीपंचचक्रकीष  
 तपयांतक ॥ वीध्यवीध्यसेनसीखाई ॥ जांहांजां  
 हांगुरुजीभेदबतायो ॥ तांहांतांहांसुरतरखाई  
 १५ ॥ उंगुरुजीभ्रगुकमलकेतेदलपंकज ॥ कुंन  
 देवप्रस्थाना ॥ केतेजापभ्रजंपाउवे ॥ कुंनलोक  
 मेहेलांन ॥ १६ ॥ सुनवेपुताभ्रगुकमलदल  
 पंकज ॥ सस्वदेवप्रस्थाना ॥ सेहेस्त्रएकभ्रजंपा  
 जपही ॥ अमरलोकमेहेलांन ॥ १७ ॥ उंगुरुजीग  
 गतचक्रहेसेससबंनके ॥ केतेदलउनमांता  
 केतेजापभ्रजंपाशक्ती ॥ कुंनदेवनीद्यांता ॥ १८  
 सुनवेपुतागगतचक्रहेसेसससमो ॥ सेहेस्त्र  
 दलउनमांता ॥ तेतेजापभ्रजंपाशक्ती ॥ जीत्यस्व  
 रुपभगवांता ॥ १९ ॥ उंगुरुजीसप्तचक्रकोसक  
 ससभेदा ॥ मोपेदीयोखखाई ॥ केहंकुवेरसतगु  
 रुपतापे ॥ कलमलजीत्यदेखाई ॥ २० ॥ **छालकेर**  
**पदः ॥** १ ॥ उंगुरुजीपंडापडोतीकपांहांजावे ॥  
 अनहयकाकपांहांवासा ॥ स्वासोस्वासपवंनकी

दोरी ॥ अंत कपां हां समासा ॥ १ ॥ सुनबेपुता अतह  
 यमां ही जोत्य समावे ॥ नाद सुं न मेवासा ॥ स्वासा  
 स्वास अंत अवीकासा ॥ ती तु अवीगत वासा  
 २ ॥ उं गुरुजी अवीगत की गत्य मोही बतावे ॥ ता  
 मे सुरतरखावु ॥ डरनी कटके मध्यमे दांता ॥ के  
 सारुपलखावु ॥ ३ ॥ सुनबेपुता अवीगत की ग  
 त अगम अगोचर ॥ रूपरंग त ही रेखा ॥ डरनी क  
 टके मध्य चराचर ॥ घाली भरन ही रेखा ॥ ४ ॥ उं  
 गुरुजी मन मेरो क रीया क्रम लाग्या ॥ सुरती  
 धेय दरंगी ॥ रूपरंग रेखा बीना अवीगत्य ॥ को  
 हो कपं महो वे संगी ॥ ५ ॥ सुनबेपुता मंन कामे  
 हेरं मचंत वी चारो ॥ सुरती धर अणालंगी ॥ से  
 हे ज सुं त्य मे रहो समाई ॥ एही विधी अवीगत्य सं  
 गी ॥ ६ ॥ उं गुरुजी अवीगत्य नां मका हाको क  
 हीये ॥ मोकुको हो समजाई ॥ को र्कहत माया कु  
 अवीगत ॥ सब घट रही समाई ॥ ७ ॥ सुनबेपुता  
 माया अवीगत ज बल ग कहिये ॥ आत्म तत्व न  
 जां त्या ॥ दीन की षवेर न ही गुड बाकु ॥ ते ज तारु  
 का वांता ॥ ८ ॥ उं गुरुजी द्वे मंन छां डी नी ज मन  
 रावु ॥ एसो लक्ष लखावे ॥ जाप दरंगी हां म फरे न  
 ही ॥ ते सी समरु पखावो ॥ ९ ॥ सुनबेपुता पंचुतं

॥ गोष्टी ॥

॥ ७३ ॥

तंतंतमेमेलो ॥ मंनमेलो चैतंतमे ॥ छतैपंडासो  
व्यकुवेहेचो ॥ नाआवोफेरओदतमे ॥ १० ॥ वैगुरु  
जीपंचुतंतंतमेमेलु ॥ मंनचैतंतलेहेलावुके  
हंकुवेरसतगुरुपरतापे ॥ हंसैहंसमेलावु ॥ ११ ॥  
दोहा ॥ हंसैहंसमेलायके ॥ अरसपरसएकरु  
प ॥ साहेबकुवेरसीरसांमथा ॥ नीजपतीपरम  
अनुप ॥ १ ॥ इतीश्रीज्ञानमणीबोधगुरुशीष्य  
संमवादेपरमपुरुषपरमेश्वरनांमनीरुपेन  
संपुर्णः ॥ अथचैतांमणीलीष्यते ॥ मनतुसमक  
नेमेरा ॥ छोडीजककाभेडा ॥ चुपेचैतनेवेरा ॥ क  
रलेसंतसुनेडा ॥ दासंतदासहीकेरा ॥ सतगुरु  
चरणचीतहेडा ॥ १ ॥ संसेसोषपावकतीर ॥ चंच  
लचपलकुकराथीरा ॥ घटमेयोजकरलेमाई ॥  
बाहरकेपौरहोभरमाई ॥ २ ॥ षठसेएकवीहजा  
रा ॥ द्वादशद्वारदरसेबाहारा ॥ स्वासासबसेके  
हुटे ॥ कायाकंचकीफटे ॥ ३ ॥ साधतसाध्यलेअत  
सारा ॥ त्रकुटीतंतुतीतवीचारा ॥ मुलचक्रद्वारावें  
धा ॥ सुधोकरलेमेरुडंडा ॥ ४ ॥ जपलेजापअजंया ॥  
सुन्यहीसीपरघरमेजाया ॥ चंदासुरकाघरफेर  
उलटाअगमघरकुहेसा ॥ ५ ॥ करलेवासवेहद्युमे  
मायाकालरेहेहद्युमे ॥ अनहद्युनादकीधुनी